ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-2* March- 2021
Innovation The Research Concept

कानपुर की कुछ प्रमुख सांगीतिक संस्थाएं
Some of The Major Musical Institutions of Kanpur

Paper Submission: 12/03/2021, Date of Acceptance: 22/03/2021, Date of Publication: 23/03/2021

अमित सिंह
विभागाध्यक्ष,
संगीत विभाग,
यूनाईटेड पब्लिक स्कूल,
सिविल लाइन्स
कानपुर उ०प्र० भारत

सारांश

कानपुर में संगीत के विकास एवं प्रचार प्रसार के लिए पिछले कई दशकों से कार्य कर रही संगीतिक संस्थाओं में से कुछ का उल्लेख किया गया है। संस्थाओं के गहन के उद्देश्य एवं इनके द्वारा आयोजित कुछ कार्यक्रमों का संक्षिप्त ब्योरा दिया गया है।

Some of the musical institutions working for the development and promotion of music in Kanpur have been mentioned for the last several decades. A brief description of the objectives of the institutions and some programs organized by them is given.

मुख्य शब्द : संगीत समाज, उच्च स्तरीय पाठ्यक्रमों, सांगीतिक संस्थाएं।
Music Society, High Level Courses, Musical Institutions.

प्रस्तावना

स्मृति संस्था

स्मृति संस्था स्व0 श्री मुन्नू गुरू जी की स्मृति में सन् 1981 में स्थापित की गयी।[1] 27 फरवरी, 1982 को 'स्मृति' द्वारा प्रथम अखिल भारतीय संगीत समारोह का आयोजन किया गया जिसमें कलाकार के रूप में गायन में स्व0 श्रीमती निर्मला ''अरूण'' तबले में पद्मश्री स्व0 श्री सामता प्रसाद मिश्र (गुदई महाराज), ;नृत्य मे –श्रीमती मधु मिश्रा, (सितार) मे –प्रो0 राजभान सिंह ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किए। स्मृति द्वारा ये अखिल भारतीय संगीत समारोह प्रत्येक वर्ष फरवरी माह में आयोजित किया जाता है। स्मृति के इस संगीत समारोह में भारतवर्ष का प्रत्येक बड़ा कलाकार शिरकत कर चुका है जैसे पं0 दुर्गा लाल , श्री एम0 राजम्, ओम प्रकाश मिश्र 'बच्चा जी–, सुभाष निर्वाण, सुश्री मालविका सरकार, पं0 राजन साजन मिश्रा, श्री राम मोहन, श्रीमती उर्मिला नागर, भजन सोपारी, श्री संजीव अभ्यंकर, वीणा सहस्रबुद्धे, शाहिद परवेज, जितेन्द्र महाराज, नलिनी कमलिनी, कु0 रानी खानम, शोभा मुद्गल, रघुनाथ सेठ, सुश्री अश्विनी भिडे, पं0 छन्नू लाल मिश्र इत्यादि। इस संस्था के प्रबन्धकारिणी में गृहपति श्री ए0पी0 सिंह संयोजक– राजेन्द्र मिश्र 'बब्बू', प्रबन्धक– निदेश बाजपेयी, विशेष सहयोगी– राम प्रकाश शुक्ल 'शतदल', सदस्य– श्याम नारायण बाजपेयी, चन्द्र नारायण कालरा, एम0के0 वर्मा, लक्ष्मी नारायण दीक्षित, मदन यादव हैं।

संगीत समाज

सन् 1928 में संगीत समाज कानपुर की स्थापना हुई थी। कानपुर में संगीत के प्रचार प्रसार के लिए इस संस्था की रचना की गयी। इसका उद्देश्य संगीत के लिए लोगों में रूचि उत्पन्न करना तथा उसका प्रचार प्रसार करना। इसका प्रधान कार्यालय कानपुर में ही होगा ऐसा निर्णय लिया गया था। कोई भी संगीत प्रेमी 'संगीत समाज' के उद्देश्यों से सहानुभूति रखने वाला इसका सदस्य हो सकता था। इस संस्था के उध्देश्य थे– समय–समय पर गायन, वादन एवं नृत्य के कार्यक्रमो का आयोजन करना, समय–समय पर संगीत विषय पर चर्चा आयोजित करना, संगीत के कार्यक्रमों के लिए बाहर से गुणीजनों को आमंत्रित करना। संगीत प्रशिक्षण हेतु संगीत विद्यालय चलाना। संगीत सम्बन्धी पुस्तकों, पत्रों, वाद्यों तथा अन्य सामग्रियों का संग्रह करना तथा इन विषयों पर लेखों तथा पुस्तकों को प्रकाशित करना।

सन् 1929 में द्वितीय युक्त प्रान्तीय संगीत परिषद् की बैठक, संगीत समाज, कानपुर की अध्यक्षता में हुई– युक्त प्रान्तीय संगीत परिषद् का द्वितीय अधिवेशन कानपुर के एडवर्ड मेमोरियल हॉल में तारीख 23 फरवरी, 1929 को शाम को प्रारम्भ हुआ था।1 इस अधिवेशन में देश की नामी गिरामी संगीत हस्तियों ने भाग लिया था। श्री रामकृष्ण (नासिक) तथा पाण्डुरंग रामचन्द्र डांडेकर (कोल्हापुर), रघुनाथ राव पटवर्धन, वामन राम पाण्डे, श्री ठुण्डीराज

पलुस्कर एवं विष्णु दिगम्बर पलुस्कर नात् साहब, श्री नारायण राव जोशी (बलुवा जोशी) इत्यादि।

इस संस्था ने कानपुर के सांगीतिक विकास में अहम भूमिका निभायी थी। इस संस्था ने बड़े–बड़े कार्यक्रमों के जरिये शहर वासियों में संगीत की जागृति पैदा की, फलस्वरूप कानपुर में संगीत का सुन्दर वातावरण तैयार होने लगा। घर–घर में संगीत को लोकप्रिय करने में इस संस्था का गौरवमयी और महत्वपूर्ण योगदान है।

अध्ययन के उद्देश्य

इसके द्वारा कानपुर में संगीत के विकास क्रम को और इन संस्थाओं के द्वारा समाज में संगीत को किस प्रकार प्रतिष्ठित किया गया जानने का प्रयास किया गया।

भारतीय संगीत तथा ललित कला विद्यापीठ

इस संस्था के जन्मदाता श्री एस0सी0 कौशल (एडवोकेट) थे। इस संस्था के प्रधान संरक्षक डॉ0 कृष्णराव शंकर पंडित एवं प्रमुख परामर्शदाता संगीत मार्तन्ड श्री विनायक राव पटवर्धन थे। विद्यापीठ के ध्येय और लक्ष्य के अनुसार संगीत और ललित कलाओं द्वारा राष्ट्र चरित्र का निर्माण करना। संगीत, नृत्य, नाट्य तथा अन्य ललित कलाओं की शिक्षा और परीक्षाओं का स्तर ऊँचा करना तथा उनके लिए उच्च स्तरीय पाठ्यक्रमों का निर्माण करना। संगीत, नृत्य, नाट्य तथा अन्य ललित कलाओं का प्रचार और प्रसार करना, संगीत तथा अन्य ललित कलाओं की शिक्षा तथा उसके अन्वेषण कार्य के लिए नगर व देश के विभिन्न भागों में ''सरस्वती मन्दिर'' अथवा ''कला मंदिरों'' का निर्माण करना। संगीत तथा ललित कला के क्षेत्र में कार्य करने वाले लोगों को सम्मानित करना। संगीत तथा ललित कला विषयक व्याख्यान मालायें करना, सम्मेलन (Conference) करना, प्रतियोगितायें कराना, पत्रिकाएँ निकालना तथा तत्सम्बन्धी पुस्तकालयों की स्थापना करना इत्यादि। इस संस्था की स्थापना सन् 1952 में हुई इससे पूर्व सन् 1937 में भारतीय कला संघ के नाम से यह संस्था कार्य करती थी। इसका कार्यालय ब्रिटिश रेडियो बिल्डिंग मालरोड़ कानपुर में था। इस संस्था के संरक्षकों में प्रमुख थे डॉ0 गौरहरि सिंहानियां (जे0के0 इण्डस्ट्रीज़ के डायरेक्टर), श्री सीताराम जैपुरिया (एम0पी0 एवं उद्योगपति तथा डायरेक्टर जैपुरिया इण्डस्ट्रीज), श्री राम गोपाल गुप्त (उद्योगपति तथा डायरेक्टर बी0आर0 इण्डस्ट्रीज), श्री कृष्ण नारायण माथुर (उद्योगपति तथा मैनेजर गणेश फ्लोर मिल)। संस्था के परामर्श मण्डल में संगीत रत्नालंकार डा0 श्रीकृष्ण राव शंकर पण्डित (ग्वालियर), संगीत मार्तण्ड श्री बी0एन0 पटवर्धन (पूना), संगीत मार्तण्ड उ0 रहीमउद्दीन खाँ डागुर (लखनऊ), संगीत आचार्य श्री नारायण राव व्यास (बम्बई), उ0 चाँद खां साहब (दिल्ली), आचार्य शंकर श्री पाद बोडस (कानपुर,) गायनाचार्य श्री वी0एन0 ठकार (इलाहाबाद)। विद्यापीठ के संचालकों व प्रबन्धकों में मुख्य रूप से शिक्षाविद् श्री वीरेन्द्र स्वरूप (एम0एल0सी0), श्री राजाराम शास्त्री (एम0एल0सी0), श्री बी0सी0 कौशल आदि थे।

कॉनकार्ड

कॉनकार्ड संस्था कानपुर की एक प्रमुख संस्था थी जिसने कई वृहद सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों को कानपुर के लिए पेश किया। इस संस्था की अध्यक्षा डॉ0 लक्ष्मी सहगल थीं जिनको लोग कैप्टन लक्ष्मी सहगल के नाम से जानते हैं क्योंकि आप नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा बनायी गयी 'आजाद हिन्द फौज' में कैप्टन रह चुकी हैं। इस संस्था के चेयरमैन श्री धर्मपाल अरोड़ा एवं सचिव श्याम मनोहर द्विवेदी थे। अन्य सचिवों में कुलदीप कपूर, सुरेन्द्र शर्मा, ओ0पी0 मिश्रा, वीरेन्द्र बाजपेई, रजनीकान्त मिश्रा, एस0डी0 शर्मा, योगेश तिवारी, सालिस ए0 नरवी, पी0एन0 अग्रवाल थे । संयोजक श्री रमेश श्रीवास्तव थे। इनके अतिरिक्त इस संस्था से जुड़े हुए लोगों में शहर की जानी मानी हस्तियों में मुन्नू गुरू, प्रेमपाल सिंह, सनत टकरू, रमेश माथुर, सुरेश खन्ना, प्रातीपाई, पी0एन0 अग्निहोत्री, एस0आर0के0यू0 सोहन लाल अरोड़ा, राजीव सिंह, भास्कर दत्ता, नरेन्द्र तिवारी, एस0पी0 श्रीवास्तव, सी0के0 रोहतगी, कृष्ण सेकरी, देवेन्द्र जैन। इसका कार्यालय स्वरूप नगर (13/156) में स्थित था। इस संस्था ने उच्चस्तरीय संगीत के सम्मेलन आयोजित किये जिनमें देश के ख्यातिलब्ध कलाकारों ने भाग लिया। जिनमें अप्रैल 4, 1964 में उस्ताद अली अकबर खान का सरोद एवं शंकर घोष का तबले का कार्यक्रम हुआ। 9 मई सन् 1964 को सुप्रसिद्ध कत्थक नृत्यांगना श्रीमती सितारा देवी का नृत्य कार्यक्रम हुआ। 18 अक्टूबर सन् 1964 में विश्व प्रसिद्ध कत्थक नर्तक लखनऊ घराने के पं0 बिरजू महाराज का कत्थक का कार्यक्रम हुआ। 3 अप्रैल सन् 1965 को उस्ताद अली अकबर खाँ (सरोद) के साथ उस्ताद अल्ला रखा खां साहब का तबला वादन का कार्यक्रम हुआ। इसी कार्यक्रम में ए0 कानन (गायन) के साथ शंकर घोष का तबला वादन हुआ। 11 मई, 1965 को जतिन भट्टाचार्या (सरोद) के साथ पं0 किशन महाराज का तबला वादन का कार्यक्रम हुआ। नेशनल डिफेन्स फण्ड के वास्ते धन एकत्रित करने के लिए 25 सितम्बर, 1965 अ0 अमीर खां (गायन) के साथ मुन्ने खां का तबला वादन हुआ।2

नानू भइया संगीत संसद

इस संस्था की स्थापना संत गायक आचार्य प्रवर स्व0 नानू भइया तैलंग की संगीत सेवाओं को चिरकाल तक बनाये रखने एवं संगीत के प्रचार–प्रसार के लिए की गयी सन् 1962 में की गयी थीं।

इस संस्था के संस्थापक सदस्यों में श्री पुरूषोत्तम लाल कपूर, श्री हरि माधव अवस्थी, श्री कैलाश चन्द्र देव 'ब्रहस्पति' श्री आनन्द मिश्र, श्री अरूणसेन, श्री कृष्ण नरायण तैलंग, श्री गंगाधर रॉव तैलंग, ''श्री पुरूषोत्तम कृष्णदेव, श्री दिनेश मोहन मेहरोत्रा, श्री रवि प्रकाश सिन्हा थे। सन् 1968 में संसद की कार्यकारिणी में अध्यक्ष श्री रामनाथ मेहरोत्रा, उपाध्यक्ष श्री पुरूषोत्तम लाल कपूर, मंत्री श्री गंगाधर राव तैलंग, सहायक मंत्री श्री पुरूषोत्तम कृष्ण देव, श्री विजय कुमार मेहरोत्रा, कोषाध्यक्ष श्री दिनेश मोहन मेहरोत्रा, सदस्य श्री हरिमाधव अवस्थी, श्री अरूण सेन, डॉ0 एम0बी0 बोरणवकर, श्री गया प्रसाद कपूर। यह संस्था वर्ष में कई बार उच्च कोटि के कार्यक्रम

प्रस्तुत करती रही है। जिसमें देश के सुविख्यात कलाकार भाग लेते रहे हैं जिनमें पं0 नारायण राव व्यास, श्रीमती एन0 राजम्, श्रीमती उर्मिला नागर, पं0 रामजी मिश्र (महाराज) सुश्री गीता बनर्जी आदि मुख्य हैं। इस संस्था के अन्तर्गत एक संगीत विद्यालय का भी संचालन होता है जो स्व0 नानू गुरू के नाम पर श्री नानू भईया संगीत महाविद्यालय स्थापित किया गया है। इस विद्यालय को अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल, मुम्बई द्वारा अलंकार तक की मान्यता प्राप्त है।

ठाकुर अवध बिहारी मंदिर ट्रस्ट

कानपुर द्वारा आयोजित–इस ट्रस्ट के संस्थापक स्व0 श्री नारायण दास जी थे। आप एक महान समाजसेवी लोकोपकारी तथा धर्मपरायण व्यक्ति थे। आपकी भक्ति भावना एवं संगीत प्रेम के फलस्वरूप ही ट्रस्ट द्वारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन का आयोजन होता था। उत्तर भारत के सांस्कृतिक–धार्मिक कार्यक्रमों के लिए विख्यात ठा0 अवध बिहारी मंदिर ट्रस्ट की स्थापना कानपुर नगर के भक्त प्रवर, संगीत प्रेमी तथा लोकोपकारी स्व0 श्री नारायण दास जी ने अपने पूज्य पिता श्री कुशालचन्द्र जी की प्रेरणा से सन् 1892 में इस संस्था की स्थापना की थी।3 ट्रस्ट के विधान के अनुसार भगवान राम के जन्मदिन रामनवमी के पावन अवसर पर एक विराट चौपही मेला, लोकगीत तथा लोकनृत्य समारोह का आयोजन और भगवान कृष्ण की जन्माष्टमी के पुनीत अवसर पर अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन का आयोजन उसी समय से बराबर होता रहा है। यह संगीत सम्मेलन इतने वृहद स्तर पर आयोजित किया जाता था कि अब इसकी कल्पना करना भी मुश्किल है। देश का बड़ा से बड़ा कलाकार यहाँ अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता था और नगरवासियों के लिए तो यह एक वार्षिक त्यौहार जैसा था। ये समारोह पाँच – छः दिन तक चलता था ये समारोह रात– भर चलते थे जो सुबह समाप्त होते थे।

निष्कर्ष

कानपुर की संगीत की विकास यात्रा में इन संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। आज संगीत समाज में जिस प्रकार प्रतिष्ठित है उसका श्रेय काफी कुछ इन संस्थाओं को दिया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *स्मृति' संस्था के सत्रहवें वार्षिकोत्सव (22 मार्च, 1997) की पत्रिका पृष्ठ संख्या–5*
2. *'संगीत समाज' की पत्रिका वर्ष 1929 पृष्ठ संख्या–23*
3. *'कॉनकार्ड' द्वारा जी0एस0वी0एम0 मेडिकल कॉलेज आडोटोरियम में आयोजित कार्यक्रम की स्मारिका 25 सितम्बर, 1965 पृ0–2*
4. *नानू भइया संगीत संगीत संसद की पत्रिका 1968 पृष्ठ संख्या (8)*
5. *डॉ0 ठाकुर अवध बिहारी मंन्दिर ट्रस्ट कानपुर के 64 वें अधिवेशन की पत्रिका सन् 1956 (प्राक्कथन) पृ–2*
6. *(सन् 1929) - संगीत समाज की पत्रिका वर्ष 1929 पृष्ठ संख्या (23)*